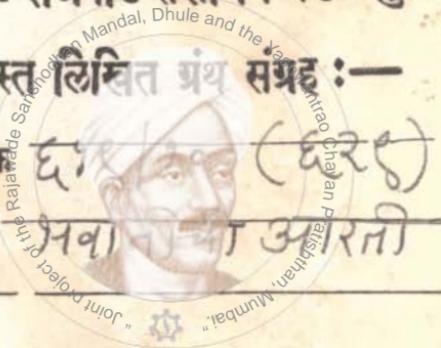


इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्तलिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक
ग्रंथ नाम

विषय



आरटी

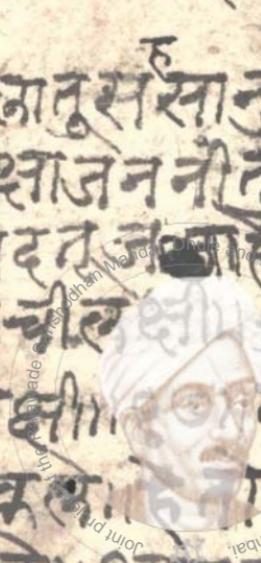
आरटी

आरटी

(1)

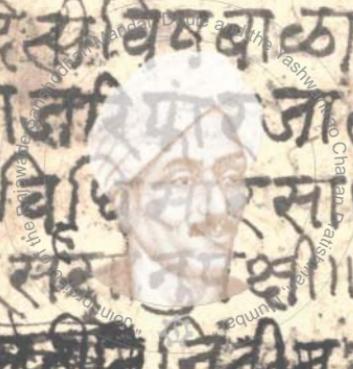
॥ बाढ़ा मज बहुत सार्वे ह दुर्ज सी ॥
॥ अभि मानि आह लणु नि मज सि ॥
॥ घोष वद सी ॥ रशी तंग नमा उले ॥
॥ साय माझा द ॥ लक्ष्य याळ सि ॥
॥ सर्व दा विश्व ॥ उये द्वा कदहि ॥
॥ दिना ची अरा ॥ तुझा पार वे दौड़ि ॥
॥ आक लेना पृथि ॥ छपा कुहे कीति ॥
॥ तुझी विराजे ॥ रंका स दुकरि ति ॥
॥ सराजे ॥ हेक्की द दुर्ज कमळा याही ॥

(2) १
॥ अंबे मत्ता नुसानु पेक्षी ॥ ९६ ॥ न
॥ सेउ पेक्षा जननी तुला ह ॥ भैरवा भि
॥ मानि विदत न जाह ॥ तुमाय माझी
॥ तुजला चौर अंबे मत्ता नुसह
॥ सानु पेक्षी ॥ न्यायो बहु संअ
॥ पराध कला ॥ मत्ता अंतरिसा
॥ क्षजाले ॥ क्षमाकरि तुजगदेक
॥ साक्षी ॥ अंबे मत्ता त सह सानु पे
॥ क्षी ॥ ९८ ॥ अंन्याय जाले जह बा
॥ छाया करी लजननी तया



Joint Project
of
Chandoh Manohar Lal
and
Yashoda
Babu
of
Parsiya
Mumbai.

(2A) ८
॥ चे ॥ दृष्टे करुनी स्वेत शिंल इश्वी ॥
॥ अंबे मला तुसी सानु प्रेष्टी ॥ १९ ॥ है
॥ मातान दे सरी विषवा छाकाला ॥ कु
॥ पुत्रही तो जारि पार जाका परसा
॥ असहा विष्टी ॥ रसाक्षी ॥ अंबे
॥ मला तुसी ॥ क्षी ॥ २० ॥ चाजा
सन् ॥ पुले वायू वै निवीक्षा माते ॥ दृ
॥ ये करुनि दिघले वरा ते ॥ पुआ
॥ पुले वायू वै निर इश्वी ॥ अंबे मला



(3)

६

॥ तु स सा नु पे क्षी ॥ २१ ॥ मी गुं त लो तो

॥ तु द्वि यो च आ सो ॥ उ दा स कै त्व्य ज

॥ न दै हां से ॥ आ न पहा मै तु द्वि ये

॥ चि पक्षी ॥ अं वे म ला तु स ह सा नु

॥ पे क्षी ॥ २२ ॥ सं गै बै हु राम

॥ जा ला ॥ ता र चा परि ता चि

॥ घा ला ॥ वा है चिं दै स जै ठवि कु क्षी ॥ २३ ॥

॥ अं वे म ला तु स ह सा नु पे क्षी ॥ २३ ॥

॥ बै हु न वचन आ ता काय बो लु

The Bhaktivedanta Book Trust, Mayapur, West Bengal, India
Digitized by srujanika@gmail.com

3A

॥ स्ववाचे ॥ तुजयिण पदनाही
॥ उकेआणि कान्चे ॥ समयठ निपर
॥ कुरामाप्रभु [redacted] कदाही ॥
॥ मनसदय ॥ बालकाते तु
॥ पेक्षी ॥ रुद्धं ॥ श्लोक त्रिवाचे ॥
॥ स्वामीकरा ॥ त्रैया मञ्जवाष
॥ हावे ॥ माझे त्रिवादुरित द्युमुक्तु
॥ करावे ॥ औसध्यतो तुजयिणही
॥ जअन्यनाही ॥ याकरणे सदय

(4)

॥ होउ निजी अपाही ॥ २९ ॥ १३ खा
 ॥ मिसा निविल्दे तुज सोभाग
 ॥ ती ॥ हेकी रिति करु इनि निग
 ॥ मादि गार ॥ सकला सव्य
 ॥ न दि च्चाप ॥ अपाही ॥ या
 ॥ कारण लहर होउ निजी अध्य
 ॥ पाही ॥ २८ ॥ देहो अपार तुमचे
 ॥ सकला रिति गवें ॥ तेष्या रिति

(5A)

॥ दोष्मिन्नणे निमुखे वदते ॥ मा

॥ इस्तहीत करणे तुजस वृद्ध हमा

॥ कांडणे सरयने न त्रिपाही अग्नि ॥

॥ तरावया भूमि वल्लजना हाता ॥

॥ तौकाज गीय राजवना ममा ॥

॥ क्लाने काछित भोजम निमग्ने

॥ मनाही माकारणे सद्य हाउनि

॥ त्रीचपाही रुदा दोषीक्षणे नि

॥ मजहान उदास कोडे ॥ त्रोक्षेनु

(5)

॥ तुझी चरण प्रकृति भूलि दिजे ॥
॥ हमाग तो परस्तु राम दुजे न कही ॥
॥ याकार छो संदय होउ निक्षिधा ॥
॥ याही ॥ ३६ ॥ दुवा रिए जसी
॥ महेका वते हाती मंग वासु
रे ॥ दूँडा ॥ याका वते दृढ़ आचे
॥ रावे ॥ प्रदोष काळी नियमेक
॥ रावे ॥ ३० ॥ लाउ नियाम सम

(5A)

॥ दिले मनाते ॥ ह द्राक्षमाळा दूरि
भ भूषणाते ॥ य उक्षरी मंत्रजपेति
॥ वान्वा ॥ तो जागि ले संबव सात्रिवा
॥ चा ॥ ३१ ॥ प्रदाता ? काळी त्रिव
॥ परम संतुष्ट न तो ॥ तये वेळी
॥ ऊका विविध राजगाला गिजपतो ॥
॥ तयादेतो भाँ भूसुकल अवदो अ
॥ ए मनी चो ॥ गुही राहे स्याचापि
॥ य करह्लाणे भर्तु अनुच्छे ॥ ३२ ॥

९
६
॥ क्षोक अं बेवे ॥ ।। भ मवती कहणान
॥ करी सका ॥ तु जं न ये आ द्युनि परि
॥ सी सका ॥ समरं तया ह तु द्यो निज अं
॥ तरी ॥ करी कृष्ण इरि इरि अंतरी ॥ ३३ ॥
॥ कठिण का धार ॥ वसुदरी ॥ मज
॥ यिता भव हार इरी ॥ तु ज अङ्गी
॥ अस ता कुळ इवैता ॥ अजु निकाय न
॥ देवि सद दता ॥ ३४ ॥ खोया युगी ज्या
॥ कि दूपा लु होणे ॥ ताल्काक ते घोचि

Some Rātāvade Bāgachan Marati, Duple and Yashvi
"One person's name is Rātāvade Bāgachan Marati,
and another is Yashvi."

(6A)

"नृष्णाकु दोणो॥ रुद्रीतु द्वीचांलतसा
॥ क्षतयेत्ये॥ दिनाविषिकायदयानयेत्ये॥
॥ ३४॥ प्रभीतो दशा अवित चंडखंडी॥
॥ दाहि द्रोते चंडे खंडी॥ कृपाक
॥ सक्षे मजला गमा द्वीचरेरक्षु
॥ निअत्र पाह॥ सखरगउयमा
॥ ईयेक जाताकरावे॥ मजचिशार
॥ पण्ड्यावे भन्नडे सेहुण्डवे॥ आपुले
॥ येत्रामणावे येत्राकीत्रिक्षियावे॥

००

(2)

॥ सकल हुरि हरा दे दै न्य वाहू निन्या
॥ क्षावे ॥ ३७॥ याका छिभद्र काळी बिं
॥ संमज जव बी प्रेम दृष्टी चाहाली ॥
जे ॥ होता लाला झारी कंरनि अनुकुली
॥ खादि ल्तु त्रौं छी ॥ आताह वि
॥ झटा छी सद् बछ सली हरह
॥ हुस्त चाली ॥ दिनाते हस्त काली श
॥ उकुरि कुवली सुरुच छी ने चाली ॥ मि
॥ अहो लोभ सज्जा बहु मजवरी

Salavadee Salodhan Mar dal, while and the Yashoda Meo Chawal Patti, Mumbra, Mumbai.

(४)

॥ अंबेसदाहादिसे ॥ माझेतो अवगृणपा
॥ रदिसतीलोकीकरोहादिसेपुयाजन्मी
॥ मजपासुनीनघरहेलेसुहाई सेवानसे ॥
॥ घूर्णजित आसल कायनदिसेनुझेनुला
॥ हेदिसे ॥ ४९।

स्वयम्भासनाज
॥ ननिचीत्रकोऽचाकला अकतार
॥ दिक्षरुपमिमिरवलीहरा त्रिच्छोहे
॥ बल्लोहरी अंबसमर्थसारुनिदुजा
॥ दस्तीसहनाणिजे ॥ ईहरान्नोक्तिवत्रां
॥ करासहित तेनियोसवेध्याख्यिजे ॥ ५०।

(8)

१९

॥ श्री अंबिके ने अभयं दराला ॥ देलेदि
॥ नाते अभयं दराला ॥ आता भितोऽक्षोण
॥ भयं दराला ॥ प्रसंभवं बासुज दिंद्र
॥ राला ॥ र्घटा ॥ जे शह तीनि निज अंबि
॥ कैचे ॥ देखो ने तथा सिवाचे ॥
॥ भयासे ह्यालागु असोना ॥ कदपि
॥ अंबाहरि याव ॥ र्घटा ॥ निर्मणि
॥ काळी लिही लेवि धीने मते प्राप्त होते स
॥ दुल्हा विधीने ॥ विश्रोष होणे अथवान
॥ होणे ॥ श्री अंबिके वाचु निनाहि देणे ॥ र्घटा

(8A)

॥ पूर्वजिते करुनि यो गवडो निआला ॥
॥ श्री अंबिकेस हितवां कर प्राथि येत्ना ॥
॥ येणो चिह्ने सद्वच्छर्थीहि प्रायजालो ॥
॥ जन्मांतरे सद्वच्छर्थीहि गंगालो ॥४४॥
॥ स्मरनि जेम्भः जाणि त्रांकराला ॥
॥ सान्निध्य देववस ठेळान राला ॥५०॥
॥ कीर्तिघोषति हिला कर समृष्ट गवा ॥ अं
॥ देव प्रसाद तु मन्या मुजहा चिखावा ॥४५॥
॥ वारी लसंकट असे चिनसे चिनला ॥
॥ त्राता ॥ हे दृष्ट जाणत असे तु जवि

(9)

॥ ए आता ॥ उ पाय सर्वत्यजुनी तु जुलागे
 ॥ ध्यानो ॥ अं बेतुद्धा भरव सा ति हि लो दिगा
 ॥ तो ॥ चृद्धा श्री पार्वती सहित चांद रहा सम
 ॥ रावा ॥ तेणे करु नि भवेत् लारावा ॥ ज समर
 ॥ न्मा सियेत् नि ॥ भरहा भरावा ॥ औ बे
 ॥ स्विक्षिस म्हाक्षां द यराया ॥ चृष्टा वर
 ॥ शील तृज रिति वा आणि भवानी ॥ त्रे छु
 ॥ लोक्य ह मग तुद्धा वचना त्रिमानी ॥
 ॥ अंन्य त्रहे मग उपाय कर्त्ता सक्तावे ॥
 ॥ सर्वत्र ग्रान्ति तु जना समर ताचि पाषु ॥ चृष्टा

© 2014 by the Bodhan Mandir Trust and the Government of Maharashtra

(9A)

॥ देणे अपार क्रिया व पार्वति धी अजीचे ॥ केली कृ
॥ पासगत या त्रिदारि इन्हें केचे ॥ चारीयुगी
॥ बहुत थोर है थोर जाले ॥ स्याला दिलेत्रि
॥ व असे अठरा कियाले ॥ ईलु धाव याव
॥ मजला गि भवा नी ॥ निया बहुत अभि
॥ माना ॥ क्लेक्षा वाह ॥ नास्त्रख यावे ॥ दृस
॥ रेमनि क्रिया अधरा वे ॥ पाहिली स
॥ गुणमूर्ति भकानी ॥ दास्त्र पाल्ठ द्रवहुआ
॥ भिसानी ॥ सर्वसास्य मजला गि करीते ॥

Joint Project of
the Sahitya Akademi and the Yashwant Rao Chivapuri
Museum, Mumbai
Number: 1000

(10) १३
॥ भज्ञु वृत्तं असेत्यणवीते ॥ ४३ ॥
॥ निंधालोमी आता शरण तु बला माय जन
॥ नै ॥ अनकासाध्या या नष्ट उत्थणु निचि
॥ त भजनी ॥ अता माही चिंता सङ्कल
॥ अवधी सर्वह ॥ तु द्वया पाई अंबेद
॥ ठ तर मिठी पुणा लो ॥ ४३ ॥ महामा
॥ ये माये तु जल्य न ल सय कृपुर ते ॥ बहु
॥ वाटे वाटे कठिण हमजे तु दीस ता ज
॥ पाया उपाया तु जीविण दु जे अंच्यन

४३

अपाया अपाया न करौ जननी हेस्त पतसे ॥

००८)

॥ इस्तोऽहम् ॥ पाहागे पाहागे जननी मि
॥ जनु पूर्ण सदये ॥ राहागे राहागे मज
॥ समिक्षते झां त्रिपटया ॥ हरावे हरावे
॥ सकलं हरित लते ॥ करावे
॥ करावे मजवा लागि पुरता ॥ ५६ ॥
॥ करावे जाता आ ... वभय हरे साग
॥ सगुणा महाकाम्पेदि सति अमि
॥ तीपुर्वत हुणा अस्ते हारि वारी अणि
॥ कहु सर काणि न हिसा ॥ सुणो निजाणो
॥ नीजननी नुजता प्राथि त अस ॥ ५७ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com